प्रस्तावना

पत्रकारिता जैसे व्यापक और विशद विषय में महिला पत्रकारिता की अवधारणा भले ही कुछ अटपटी लगती है, किंतु नारी स्वातंत्र्य और समानता के इस युग में भी आधी दुनिया से जुड़े ऐसे अनेक पहलू हैं जिनके महत्त्व को देखते हुए महिला पत्रकारिता की अलग से आवश्यकता महसूस होती है।

पुरुष और नारी के भेद का सबसे बड़ा आधार तो उनकी अलग शारीरिक संरचना है। प्रकृति ने पुरुष को एक सांचे में ढाला है तो नारी को उससे अलग। एक समय था जब समाज पुरुष प्रधान था। पुरुष प्रधान समाज ने अपनी सुविधानुसार नारी को अबला बनाकर घर की चारदीवारी तक सीमित कर दिया था। विकास की निरंतर तेज गति से बदलते दौर ने महिलाओं को प्रगति का समान अवसर दिया और महिलाओं ने अपनी प्रतिभा और लगन के बलबूते पर समाज के हर क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ने का जो सिलसिला शुरू किया वह लगातार जारी है। आज के दौर में कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं जहाँ महिलाओं की सशक्त उपस्थिति नहीं हो। राजनीति, प्रशासन, सेना, शिक्षण, चिकित्सा, विज्ञान, तकनीक, उद्योग, व्यापार, समाजसेवा आदि प्रमुख क्षेत्रों में महिलाओं ने अपनी प्रतिभा और क्षमता के आधार पर अपनी राह खुद बनाई है। कई क्षेत्रों में तो कड़ी स्पर्धा और कठिन चुनौती के बावजूद महिलाओं ने अपना शीर्ष मुकाम बनाया है।

तेजी से बदलते सामाजिक परिवेश तथा महिला पुरुष समानता के इस दौर में महिलाएँ अब घर की दहलीज लाँघकर बाहर आ चुकी हैं। प्रायः हर क्षेत्र में महिलाओं की उपस्थिति और भागीदारी नजर आती है। शिक्षा ने महिलाओं को अपने आधिकारों के प्रति जागरूक बनाया है। अब महिलायें भी अपने करियर के प्रति सचेत हैं। महिला जागरण की इस नवचेतना के साथ-साथ महिलाओं के प्रति अत्याचार और अपराध के मामले भी बढ़े हैं। महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बहुत सारे कानून बने हैं और आवश्यकतानुसार उसमें समय-समय पर संशोधन भी किये जाते रहे हैं। महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा दिलाने में महिला पत्रकारिता की अहम भूमिका रही है। महिला पत्रकारिता की आज अलग से जरूरत ही इसलिए है कि उसमें महिलाओं से जुड़े हर पहलू पर गौर किया जाए और महिलाओं के सर्वांगीण विकास में यह महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सके। महिला पत्रकारिता की सार्थकता महिला सशक्तीकरण के उद्देश्य से जुड़ी है।

महिलाओं की सार्थक उपस्थिति विश्व की विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं तक में देखी जा सकती है। राजनीति से लेकर व्यवसाय प्रबंधन, संस्कृति, कला ज्ञान के क्षेत्र में भी वे पीछे नहीं हैं। पहले जहां मीडिया में महिलाओं की संख्या नगण्य थीं, वहीं रेडियो, दूरदर्शन, प्रिंट मीडिया सभी जगह इनकी संख्या में जिस अनुपात में विस्तार हो रहा है, वह यह सिद्ध करता है कि अब निरंतर विस्तार ही होता जाएगा, घटेगा नहीं क्योंकि ज्ञान, गुण, वैचारिक शक्ति, तर्क, लेखन और प्रस्तुति में स्त्री की भूमिकाओं को सराहा जा रहा है।

मृणाल पाण्डे, विमला पाटील, बरखा दत्त, सीमा मुस्तफा, तवलीन सिंह, मीनल बहोल, सत्य शरण, दीना वकील, सुनीता ऐरन, कुमुद संघवी चावरे, श्वेता सिंह, पूर्णिमा मिश्र, मीमांसा मल्लिक, अंजना ओम कषयं, नेहा बाथम, मीनाक्षी कंडवाल, सुभाषिनी अली सहगल, मणिमाला, मधु किश्वर, क्षमा शर्मा, नलिनी सिंह, नीलम गुप्ता, अमृता राय, शैलबाला, पीके राजलक्ष्मी, ऋतु सरीन, नीरजा चौधरी, संचिता शर्मा, गीताश्री, निधि कुलपति, भाषा सिंह, वासवी, निवेदिता, मनीषा, सुमैरा खान, अरफा आलम शेरवानी, इरा झा, नेहा पन्त, सुषमा वर्मा, अंजना ओम कश्यप, शिल्पा शर्मा आदि पत्रकारिता के क्षेत्र के महत्वपूर्ण नाम हैं। आज भारत में पत्रकारिता के क्षेत्र में महिला पत्रकारों के आने से देश की हर लड़की को अपने जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिल रही है।

समकालीन हिंदी पत्रकारों में मृणाल पाण्डे की खास पहचान है। उन्होंने जिंदगी को नजदीक से देखने, अनुभव करने और जीवन संस्पर्श से उसकी सजीव सशक्त अभिव्यक्ति पत्रकारिता और साहित्य में देने की कोशिश की है। नारी जिंदगी की ही नहीं, सामाजिक जीवन के समस्त पहलुओं को उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। साहित्य की लगभग सभी विधाओं में उन्होंने सफलतापूर्वक कलम चलाई है। उनका रचना संसार बहुत व्यापक है लेकिन वे मूलतः मीडिया पर्सन हैं। नाटक, कहानी, उपन्यास, निबंध, पत्रकारिता, आलोचना ख़ास तौर पर स्त्री विमर्श आदि सभी विधाओं में उन्होंने अपनी अमिट छाप छोडी है।

मृणाल पाण्डे ने अपना लेखन कार्य हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में किया है। आर्थिक समानता के द्वारा अमीर-गरीब, स्त्री-पुरुष की खाई को पाटने का संकल्प उनकी रचनाओं में प्रकट है। उनके लेखन में उच्च वर्ग की भावहीनता, प्रेम, व्यवहार, अकेलापन, दहशत आदि का चित्रण तथा उनमें घुटती-पिसती स्त्री को उकेरने का प्रयास भी है। वैचारिक तीखेपन के साथ-साथ मानव-मूल्यों के प्रति गहरा लगाव उनकी रचनाओं में स्पष्ट दिखाई देता है। धर्म, नैतिकता, परंपरा, विश्वास आदि को लोकाचार, बौद्धिकता, तार्किकता के धरातल पर दिखाने का प्रयास मृणाल पाण्डे ने किया है। आडम्बरों और कुरीतियों पर प्रहार करने में उन्हें बड़ी सफलता भी हासिल हुई है।

मृणाल पाण्डे का रचना संसार विशाल है। उन्होंने नाटक, कहानी, उपन्यास, निबंध, पत्रकारिता, अनुवाद आलोचना ख़ास तौर पर स्त्री विमर्श आदि सभी विधाओं में लेखनी चलायी है। उन्होंने अपनी रचनाओं के जरिये नारी की अस्मिता को जगाने का प्रयत्न किया है। सामाजिक यथार्थ का चित्र उनके साहित्य में मिलता है। मृणाल पाण्डे ने अपने साहित्य में आधुनिक परिवेश में अपनी अस्मिता को तलाशती स्त्री का चित्रण किया है। साथ ही स्त्री और पुरुष के संबंधों को नए रूप से देखने की कोशिश भी की है। मृणाल पाण्डे के साहित्य में आधुनिक नारी की नियति, भटकाव, यंत्रणा, जिजीविषा आदि सभी विषयों का खुला चित्रण हुआ है।

किसी पत्रकार की पत्रकारीय दृष्टि के बारे में लिखने या कहने से पहले उसके जीवन और व्यक्तित्व के पहलुओं को जानना जरूरी है। पत्रकार जो कुछ भी लिखते हैं उसमें उनके व्यक्तित्व की छाप अवश्य दिखाई देती है। हिंदी पत्रकारिता को मृणाल जी ने जो योगदान दिया है, इसके समग्र मूल्यांकन से की कोशिश इस लघु शोध प्रबंध में की जाएगी।

इस शोध प्रबंध को कुल पांच अध्याय में विभाजित किया गया है। प्ररथम अध्याय में शोध विषय से सम्बंधित जानकारियाँ दी गयी हैं, जिसमें साहित्य पुनरावलोकन, शोध उद्देश्य, प्राकल्पनाओं तथा शोध प्रविधि के बारे में बताया गया है। द्वितीय अध्याय मृणाल पाण्डे के जीवन प्परिचय से सम्बंधित है, जिसमें मृणाल पाण्डे के अब तक के संपूर्ण जीवन का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में स्त्री तथा पत्रकारिता को उल्लेखित किया गया है, जिसमें महिलाओं की पत्रकारिता में प्रस्तुति, समस्याएं आदि का वर्णन किया गया है। पंचम अध्याय में मृणाल पाण्डे के पत्रकारीय लेखन का विवेचनात्मक अध्ययन किया है, जिसमें उनके द्वारा लिखे गए लेखों को शामिल किया गया तथा उनका विश्लेषण किया है। इस अध्याय में मृणाल पाण्डे के सामाजिक तथा राजनीतिक दृष्टिकोण को दर्शाया गया है। अंत में इस लघु शोध प्रबंध का निष्कर्ष दिया गया है।

आभार

शोध का कार्य अपने आप में एक श्रमसाध्य कार्य है। प्रस्तुत शोध प्रबंध को पूर्ण करने में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अनेक लोगों ने सहयोग किया। जिनके प्रति आभार व्यक्त करना शोधार्थी का नैतिक दायित्व है। सर्वप्रथम मैं अपने शोध निर्देशक आदरणीय गुरुवर प्रो. कृपाशंकर चौबे की हृदय से आभारी हूँ जिनके स्नेहिल सानिध्य में रहकर मैंने यह कार्य पूर्ण किया। निर्देशक के रूप में मेरे गुरुवर ने समय-समय पर न केवल मेरा मार्गदर्शन किया बल्कि विषय की व्यापकता को देखते हुए उन्होंने मुझे कार्य करने के लिए पूरी छूट भी दी। इस कार्य में स्नेहात्मक सहयोग के लिए अपने विभाग के अध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार राय, शिक्षकगण डॉ. धरवेश कठेरिया, डॉ. अख्तर आलम, श्री संदीप कुमार वर्मा, श्री राजेश लेहकपुरे, डॉ. रेणु सिंह और की हृदय से आभारी हूँ।

मैं आदरणीय गुरुवर्य प्रोफेसर शम्भूनाथ सिंह की हृदय से आभारी हूँ ,जिन्होंने मुझे मानसिक संबल प्रदान करने के साथ- साथ मेरे शोध को एक दिशा देने में मेरी सहायता की। गुरुवर्य ऐडजन्क्ट प्रोफेसर अरुण कुमार त्रिपाठी को मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिनकी प्रेरणा ने मुझे मेरे शोध के अंतिम चरण तक पहुंचाया। मैं वरिष्ठ पत्रकार श्रीमती क्षमा शर्मा का भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया।

मैं अपने मित्र कविता वर्मा और राम सुंदर कुमार के प्रति विशेष आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने अनेक कठिन परिस्थितियों में मेरा सहयोग किया। मैं अपने परिवार के सभी जनों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे मानसिक शक्ति प्रदान करने के साथ-साथ मेरा मनोबल बढ़ाने का कार्य किया। इनके सहयोग को शब्दों में व्यक्त करना मेरे लिए कठिन है।

आभार तो एक औपचारिकता है, वास्तव में मैं सभी लोगों की ऋणी हूँ।

अनुक्रमणिका

अध्याय एक- शोध: विषय प्रवेश **1-10**

1.1 साहित्य पुनरावलोकन

1.2 शोध का उद्देश्य

1.3 शोध की प्राकल्पना

1.4 शोध प्रविधि

1.5 शोध की प्रासंगिकता

1.6 शोध का भविष्य

अध्याय दो- मृणाल पाण्डे का परिचय **11-17**

2.1 जीवन परिचय

2.2 सम्पादन

2.3 प्रकाशित पुस्तकें

2.4 विभिन्न भूमिकाएं- अन्य उपलब्धियां

अध्याय तीन- पत्रकारिता और स्त्री **18-31**

3.1 पत्रकारिता: सामान्य परिचय

3.2 महिला पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास

3.3 हिंदी पत्रकारिता में महिलाओं की प्रस्तुति

3.4 पत्रकारिता के क्षेत्र में महिलाओं की समस्याएँ

3.5 पत्रकारिता और स्त्री पर आधारित कुछ प्रमुख कृतियाँ

अध्याय चार- मृणाल पाण्डे का हिंदी पत्रकारिता में योगदान **32-46**

4.1 एक सम्पादक के रूप में

4.2 एक पत्रकार के रूप में

4.3 स्तम्भ लेखक के रूप में

4.4 मीडिया संस्थानों या संगठनों में उनका योगदान

अध्याय पांच- मृणाल पाण्डेय के पत्रकारीय लेखन का **47-103**

विवेचनात्मक अध्ययन

5.1 मृणाल पाण्डे का सामाजिक दृष्टिकोण

5.2 मृणाल पाण्डे का राजनीतिक दृष्टिकोण

5.3 प्राकल्पनाओं का परीक्षण तथा सामान्यीकरण

निष्कर्ष **104-108**

संदर्भ ग्रन्थ सूची

परिशिष्ट

“...स्त्री की मुक्ति यह कहने से नहीं होती कि स्त्री-मुक्ति होनी चाहिए। जैसे गाना सीखना हो तो पूरी तन्मयता से सीखना पड़ता है। वैसे ही मुक्ति का संघर्ष समझना हो तो उसमें डूबना ही पड़ता है।”

-(मृणाल पाण्डे)

संदर्भ ग्रंथ सूची

पुस्तक सूची-

1. पाण्डे, मृणाल. (2008). *परिधि पर स्त्री*. नयी दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड.
2. पाण्डे, मृणाल. (2012). *स्त्री: लम्बा सफ़र*. नयी दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड.
3. पाण्डे, मृणाल. (2008). *जहाँ औरतें गढ़ी जाती हैं*. नयी दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड.
4. पाण्डे, मृणाल और शर्मा, क्षमा. (2009). *बंद गलियों के विरुद्ध-महिला पत्रकारिता की स्थिति*. नयी दिल्ली: राजकमल पेपरबैक्स.
5. राणावत, उषाकीर्ति. (2010). *लेखन में महिला*. जयपुर: साहित्यागार.
6. यादव, राजेन्द्र. (2007). *आदमी की निगाह में औरत*. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन.
7. गुप्ता, रमणिका. (2012). *स्त्री मुक्ति: संघर्ष और इतिहास*. नई दिल्ली: सामयिक प्रकाशन.
8. जैन, अरविन्द. (1996). *औरत होने की सज़ा*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
9. पाण्डे, मृणाल. (2008). *देश की राजनीति से देह की राजनीति तक*. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन.
10. गीताश्री. (2011). *औरत की बोली*. नई दिल्ली: सामयिक प्रकाशन.
11. के.पी., प्रमीला. (2015). *स्त्री अध्ययन की बुनियाद*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

वेब साइट सूची-

1. http://www.livehindustan.com/kadambini/1.html
2. https://books.google.co.in/books?id
3. http://www.hindisamay.com/writer/
4. https://www.google.co.in/search?rlz
5. https://www.notedlife.com/hi/Mrinal-Pande-biography-in-hindi
6. http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/22853/5/05_chapter-1.pdf

7. http://www.newswriters.in/2016/02/01/women-and-new-media/
8. http://www.dw.com/hi/
9. https://www.prabhatkhabar.com/news/columns/story/1071060.html
10. http://www.im4change.org/hindi/%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%
11. http://ihind.in/news/170208236828241f
12. https://naidunia.jagran.com/editorial/expert-comment-new-policies-of-development-in-new-era-1282200
13. http:/googleweblight.com/i?u=http://arvindsisodiakota.blogspot.com/2013/blog-post.html?m%3D1&grqid=X6NO9GE3
14. https://en.wikipedia.org/wiki/Lok_Sabha_TV
15. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%B0_%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%80
16. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%B8_%E0%A4%9F%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%9F_%E0%A4%91%E0%A4%AB%E0%A4%BC_%E0%A4%87%E0%A4%82%E0%A4%A1%E0%A4%BF%E0%A4%AF%E0%A4%BE
17. https://www.jagran.com/news/national-jagran-special-kuldeep-nayar-writeup-on-women-reservation-16776634.html
18. http://www.mediaforrights.org/infopack/hindi-infopack/551-%E0%A4%98%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%B2%E0%A5%82-%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%82%E0%A4%B8%E0%A4%BE
19. https://aajtak.intoday.in/crime/story/domestic-violence-act-provides-protection-to-women-1-851234.html

20. http://topdais.com/headingwise.php?id=1462
21. http://kanyabrunhatyaa.blogspot.in/
22. http://www.dw.com/hi/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A5%82%E0%A4%B2%E0%A5%8B%E0%A4%82%E0%A4%AE%E0%A5%87%E0%A4%82%E0%A4%AF%E0%A5%8C%E0%A4%A8%E0%A4%B6%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B7%E0%A4%BE%E0%A4%B8%E0%A5%87%E0%A4%85%E0%A4%82%E0%A4%95%E0%A5%8
23. http://panchjanya.com/arch/2002/3/31/File20.htm
24. http://www.hindisamay.com/content
25. http://hindimedia.in/world-shilpi-of-the-ram-katha-father-kamil-bulke/
26. http://mea.gov.in/distinguished-lectures-detail-hi.htm?117
27. https://www.narendramodi.in/hi/digital-dialogue-with-pm-modi-175557
28. http://hindi.webdunia.com/current-affairs/dr-manmohan-singh-congress-demonetization-manmohan-singh-116120500083_1.html
29. http://saathijohaar.com/2017/04/30/naxalwaad.html
30. http://editorial.mithilesh2020.com/2016/03/naxal-attack-in-chaatisgarh-hindi.html

परिशिष्ट

मृणाल पाण्डे से साक्षात्कार हेतु प्रश्नावली का प्रारूप-

शोध का शीर्षक- मृणाल पाण्डे की पत्रकारिता

शोधार्थी का नाम- गरिमा राय
विभाग- एम.फिल., जनसंचार विभाग (सत्र- 2016-17)
विश्वविद्यालय का नाम- महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

नोट- उपर्युक्त विषयक यह शोध कार्य एम.फिल. जनसंचार उपाधि के लिए उद्देश्य परक दृष्टि विस्तार तथ्य संकलन के साथ शोध के अनुसार व्याख्या में शामिल किये जाने के लिए निहितार्थ है। इस अकादमिक शोध की सामग्री, तथ्य एवं समस्त जानकारी को शोध के लिए ही उपयोग किया जायेगा।

साक्षात्कार हेतु प्रश्नावली

1. पत्रकारिता रुपी पेशा अपनाने के पीछे आपका क्या उद्देश्य रहा?
2. धर्मयुग में छपे अपने पहले लेख से लेकर प्रसार भारती के अध्यक्ष बनने तक के सफ़र का आपका क्या अनुभव रहा? उस बीच आने वाले उतार-चढ़ाव के बारे में कुछ बताये।
3. पत्रकारिता में आने के बाद आपने सबसे पहला लक्ष्य क्या निश्चित किया ?
4. विधाओं के अनुसार चूँकि आप लेखन के विभिन्न क्षेत्रों यथा पत्रकारिता, साहित्य व रचनात्मक लेखन आदि कार्य किया है। ऐसे में विभिन्न क्षेत्रों में काम करने में किस तरह की चुनौतियों/परेशानियों का सामना करना पड़ा?
5. वर्तमान समय की पत्रकारिता महिला सशक्तिकरण को लेकर कितनी सक्रिय है?

6. आज की पत्रकारिता, पत्रकारिता कम व्यवसाय ज्यादा बन गयी है, इस बारे में आपका क्या विचार है?
7. 'हिन्दुस्तान' की सम्पादक के रूप में महिला सशक्तिकरण तथा अन्य परिप्रेक्ष्य में आपका क्या योगदान रहा है?
8. आपने हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में काम किया है, तो आपकी प्राथमिकता किस भाषा को लेकर रही है?
9. पत्रकारिता में महिला पत्रकारों की भूमिका के बारे में आप क्या कहना चाहेंगी?
10. आपके मतानुसार नारीवादी होना समाज व महिला समुदाय के लिए किस प्रकार आवश्यक है?
11. पत्रकारिता में महिला लेखन किस प्रकार समृद्ध हो सकता है?
12. आने वाले समय के पत्रकारों को आप पत्रकारिता को लेकर क्या सुझाव देना चाहेंगी?

-गरिमा राय

garima.rai1193@gmail.com

7376543013

मृणाल पाण्डे, लेखिका

शम्भूनाथ सिंह तथा क्षमा शर्मा से संरचित साक्षात्कार हेतु प्रश्नावली का प्रारूप

1. मृणाल पाण्डे की पत्रकारिता को आप कैसे देखते हैं?
2. मृणाल पाण्डे की पत्रकारिता महिला सशक्तिकरण को लेकर कितना सक्रिय है?
3. क्या मृणाल पाण्डे किसी विशेष विचारधारा आदि से प्रभावित हैं और यदि हाँ तो उनकी पत्रकारिता पर उसका क्या प्रभाव देखने को मिला?
4. मृणाल पाण्डे की विभिन्न कहानियों एवं उपन्यासों के माध्यम से महिलाओं की यथास्थिति को आप कैसे देखते हैं?
5. मृणाल पाण्डे की धर्मयुग में पहला लेख छपने से लेकर प्रसार भारती के अध्यक्ष तक के सफ़र को आप कैसे देखते हैं?
6. 'हिन्दुस्तान' की सम्पादक के रूप में महिला सशक्तिकरण तथा अन्य परिप्रेक्ष्य में उनका क्या योगदान रहा है?
7. एक सम्पादक के रूप में उनके द्वारा किये गए कार्यों में से आपको सबसे प्रमुख कार्य कौन सा लगता है?
8. मृणाल पाण्डे ने हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में काम किया हैतो आप ,के अनुसार उनकी प्राथमिकता किस भाषा को लेकर रही है?
9. चूँकि उन्होंने लेखन के विभिन्न क्षेत्रों यथा पत्रकारिता, साहित्य व रचनात्मक लेखन आदि में कार्य किया है। ऐसे में उनके साहित्यिक लेखन का क्या प्रभाव उनकी पत्रकारिता में देखने को मिलता है?
10. पत्रकारिता में महिला पत्रकारों की भूमिका के बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?

शम्भूनाथ सिंह, प्रोफेसर, इग्नू

क्षमा शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार

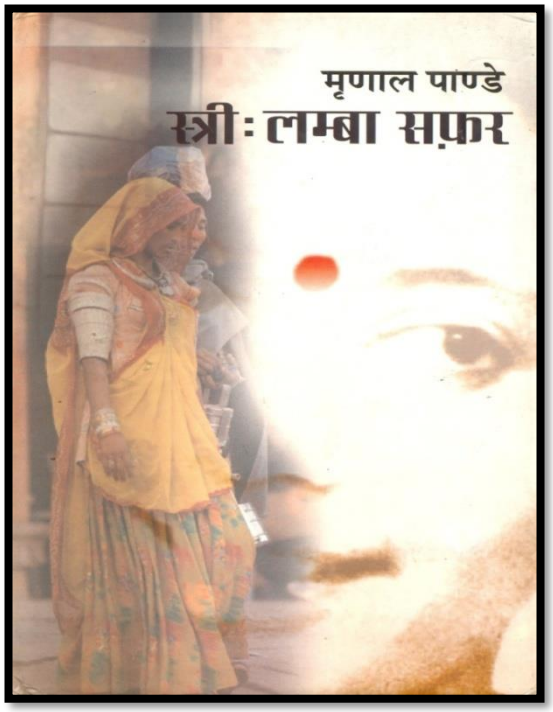
मृणाल पाण्डे
स्त्री : लम्बा सफ़र

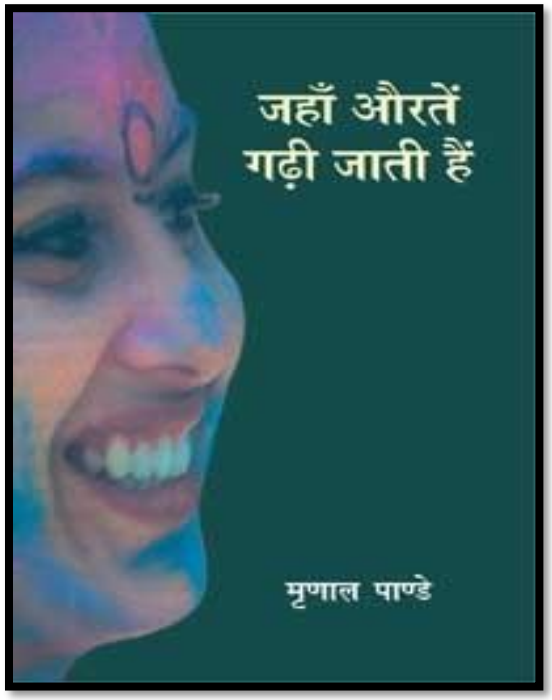
जहाँ औरतें
गढ़ी जाती हैं
मृणाल पाण्डे

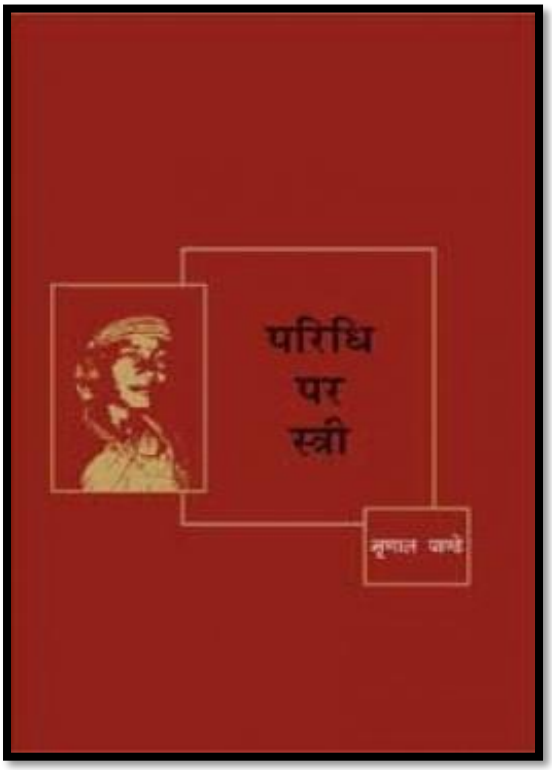
परिधि
पर
स्त्री
मृणाल पाण्डे

बन्द गलियों
के
विरुद्ध
महिला पत्रकारिता की यात्रा
Ekru
मृणाल पांडे
क्षमा शर्मा
इंडियन विमेंस प्रेस कोर

धर्मयुग
'कलमुंही
तू मर क्यों
नहीं गयी ?'

Registered No. 3.
बालाबोधिनी

वामा

कादम्बिनी
कुछ भूलते
जा रहे हैं हम